RNI No. : DELBIL/2005/15122 D.L. No. : DL (S)-01/3362/2019-21

विद्याभारती संकुल संवाद

मासिक पत्रिका

E-mail : vbsankulsamvad@gmail.com

वर्ष-15 अंक 5 अप्रैल 2019 विक्रमी सं. 2076 मूल्य : एक रुपया

हमारी शिक्षा भारत केन्द्रित हो - अवनीश भटनागर

विद्याधाम में आयोजित नेशनल व स्टेट अवार्डी टीचर्स सम्मान समारोह

'आज विश्व तीव्रता से वैश्वीकरण की ओर बढ़ता जा रहा है। ऐसे वातावरण में जब हम भारत केंन्द्रित या अपने देश व अपनी संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था की बात करते हैं तो कुछ लोग ऐसे समझते हैं कि हम पुराने विचारों के व दकियानूस हैं, परन्तु प्रत्येक देश की भौगोलिक, सामाजिक, सास्कृतिक और राजनैतिक व्यवस्था भिन्न होती है अत: शिक्षा व्यवस्था भी वैश्विक न होकर देश काल परिस्थितियों के अनुसार ही होगी। शिक्षा नीति में परिवर्तन और उसका अनुपालन सरकार द्वारा संभव नहीं है क्या, और कैसी शिक्षा नीति हो, यह तो यहाँ विद्वान शिक्षाविदों द्वारा ही तय होना चाहिए, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में शिक्षा में नए-नए प्रयोग किए हैं। अपने देश की अर्थनीति व राजनीति के साथ ही शिक्षानीति में भी परिवर्तन की जरूरत है। इन तीनों नीतियों में सामंजस्य भी आवश्यक है। अपने देश की शिक्षा का केंद्र अमेरिका या वाशिंगटन में नहीं हो सकता, उसे अपने देश में ही केन्द्रित करना होगा। पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही संस्कार और नैतिकतायुक्त शिक्षा देना ही विद्या भारती का मूल उद्देश्य है। यहाँ पर उपस्थित सभी नेशनल व स्टेट अवार्डी शिक्षकों द्वारा किए गए नए प्रयोगों को सामान्य समाजजन तक पहुँचाने हेतु ही इस समारोह का आयोजन किया गया है।' उपरोक्त भावपूर्ण उद्गार राष्ट्रीय मंत्री श्री अवनीश भटनागर ने विद्याधाम में आयोजित 14 मार्च 2019 को 'नेशनल व स्टेट अवार्डी टीचर्स' के सम्मान समारोह में व्यक्त किए।

इस समारोह में पूरे पंजाब प्रांत से 120 नेशनल व स्टेट अवार्डी शिक्षक आए। समारोह के उद्घाटन भाषण में सर्वहितकारी विद्या मंदिर, तलवाड़ा के प्रधानाचार्य श्री देशराज शर्मा ने कहा, ''विद्या भारती का मूल उद्देश्य स्कूल चलाना नहीं है। स्कूल तो उस समय भी और आज भी बहुत चल रहे हैं। परन्तु मूल उद्देश्य तो शिक्षा जगत को भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-पोत दिशा प्रदान करना है। शिक्षा को सामाजिक सरोकार से भी जोड़ना है।''

इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. बी.के. कुठिआला (अध्यक्ष उच्च शिक्षा कौंसिल, हरियाणा तथा पूर्व कुलपति माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल) उपस्थित रहे।

युथ एशियन एथलेटिक्स चैम्पियनशिप हांगकांग में विद्या भारती के दो खिलाड़ियों ने जीता पदक

हांगकांग में 15 से 18 मार्च 2019 तक आयोजित यूथ एशियन एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में विद्या भारती के दो खिलाड़ी भैयाओं का चयन भारतीय टीम में हुआ। हैमर थ्रो में भैया विपिन कुमार व पोलवाल्ट में दीपक कुमार दोनों खिलाड़ियों ने हांगकांग में आयोजित प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए विपिन कुमार ने 72.63 मीटर हैंमर फेंक कर स्वर्ण पदक एवं दीपक कुमार ने 4.70 मीटर कूद कर पोल वाल्ट में कांस्य पदक प्राप्त कर भारत का नाम रौशन किया।

भैया विपिन कुमार इसके पूर्व एस.जी.एफ.आई. की प्रतियोगिता में 74.55 मीटर हैंमर फेंक कर नए कीर्तिमान के साथ स्वर्ण पदक जीता था। एस.जी.एफ.आई. की अंडर-17 वर्ष आयु वर्ग के एथलेटिक्स चैम्पियनशिप का वेस्ट एथलीट का पुरस्कार भी विपिन कुमार को ही प्राप्त हुआ था। इसके साथ ही पूणे में आयोजित 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स' में भी विपिन कुमार ने हैंमर थ्रो में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। ये दोनों खिलाड़ी विद्या भारती पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र के रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज, राजापुर, प्रयागराज के छात्र हैं।

इनकी इस विशेष उपलब्धि पर क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री डोमेश्वर साहू जी, क्षेत्रीय खेलकूद प्रमुख श्री जगदीश कुमार सिंह, राष्ट्रीय खेल परिषद् के सह सचिव श्री मुख्तेज सिंह बदेशा एवं प्रांतीय के संगठन मंत्री डॉ. राम मनोहर जी ने उनके उज्वल भविष्य की कामना करते हुए बधाई दी।

मुख्तेज सिंह बदेशा, अ.भा. संयोजक, खेलकूद शिक्षा।

खेल के माध्यम से देशभक्ति का जज्बा पैदा कर रही है विद्या भारती

- डॉ. गोविंद शर्मा

विद्या भारती मालवा प्रांत द्वारा खेल प्रतिभा सम्मान समारोह दिनाकं 25 फरवरी 2019 को विक्रम कीर्ति मंदिर सभागार, उज्जैन में आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में अपनी बात रखते हुए डॉ. गोविंद जी शर्मा (तात्कालीन अध्यक्ष विद्याभारती) ने कहा कि खेल केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है। इससे न केवल शारीरिक क्षमता बढ़ती है वरन् देश के प्रति भक्ति का भाव भी पैदा होता है। क्रिकेट के खिलाड़ी जैसे छक्का मारते हैं तो स्टेडियम में तिरंगा लहराने लगता है और जब भारत की टीम कोई पदक प्राप्त करती है तो वह तिरंगा लहराते हुए पूरे मैदान का भ्रमण कर देशभक्ति का परिचय देती है। ओलम्पिक में जब मेडल मिलता है तब अपने देश के ध्वज को चढ़ते देख मन में हर्ष की भावना भरती है, यह सब खेल की ही महिमा है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश कुश्ती संघ के अध्यक्ष एवं उज्जैन दक्षिण क्षेत्र के विधायक डॉ. मोहन जी यादव ने सभी की ओर से देश के प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देते हुए कहा 'प्रधानमंत्री जी ने खेलो इंडिया की योजना चलाकर देश के खिलाड़ियों को अपनी योग्यता साबित करने का मौका दिया है। इसी योजना के अंतर्गत खेलो इंडिया में विद्या भारती मालवा के भैया अक्षय राठौर (उज्जैन), भैया सचिन भार्गव (देवास) तथा बहिन राधा पाटीदार (बड़नगर) इन प्रत्येक को केन्द्र सरकार की ओर से 40 लाख रूपये (पाँच वर्षो में) खेल छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की है। मैं विद्या भारती मालवा और खिलाड़ियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।'

खेल में प्राप्त मेडल की जानकारी देते विद्या भारती मालवा के खेल प्रमुख श्री कैलाश धनगर ने बताया कि कबड्डी से प्रारम्भ हुआ था विद्या भारती के खेल का सफर। गत वर्ष देश की 44 खेल यूनिटों में 299 पदक प्राप्त कर 11 वें स्थान पर था। इस 31वाँ खेलवर्ष में अब तक 383 पदक एस.जी.एफ. आई. में विद्या भारती को प्राप्त हो चुके हैं, जिसमें अखिल भारतीय स्तर पर 428 खिलाड़ियों ने भाग लेकर 290 स्वर्ण पदक प्राप्त किए।

इसी कार्यक्रम में विद्या भारती के दो पूर्वछात्र रवीन्द्र परमार एवं कृतिका भीमावत जिनका चयन डिप्टी कलेक्टर के रूप में हुआ है, उन्हें भी सम्मानित किया गया।

हरिशंकर मेहता, प्रांतीय संवाददाता मालवा प्रांत।

क्रिया आधारित शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है - श्री काशीपति जी

सीखने की सबसे सफल पद्धति है करते-करते सीखने की। बालक क्रिया करके ही सीखता है और क्रिया करने से ही अनुभव आता है। विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के माध्यम से ही भैया-बहिनों का मानसिक विकास व कौशल विकास संभव है। इसीलिए क्रियाआधारित शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है। उपरोक्त कथन विद्या भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जे.एम. काशीपति जी ने विद्या भारती शिक्षा संस्थान, जोधपुर की प्रान्तीय प्रधानाचार्य बैठक में कहा। बैठक दिनांक 23 से 25 मार्च 2019 तक जोधपुर प्रान्त के गोविन्दानन्द आदर्श विद्यामन्दिर, आबूरोड में सम्पन्न हुई। बैठक में जोधपुर प्रान्त के 305 विद्या मंदिरों के प्रधानाचार्यो ने भाग लिया।

इसी बैठक में विद्या भारती राजस्थान क्षेत्र के संगठन मंत्री श्री शिवप्रसाद जी ने अपने उद्बोधन में बताया कि हिन्दुत्त्वनिष्ठ, राष्ट्रभक्त भावी युवा पीढ़ी का निर्माण विद्या भारती का लक्ष्य है। इस हेतु बालक का सर्वांगीण विकास करने व उसे सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने हेतु आधारभूत विषयों का प्रभावी क्रियान्वयन हो। इसके लिए स्वच्छ, सुन्दर व संस्कारक्षम परिसर तथा भावपूर्ण वन्दना सत्र भी होने चाहिए। उन्होंने कहा कि बालकों में राष्ट्रभक्ति का भाव जगाने के लिए दैनिक जीवन में सामाजिक समरसता, स्वदेशी, पर्यावरण व सामाजिक सुधार के विभिन्न संकल्प लेने का भाव जागृत कराना होगा। इन सबके लिए अपने आचार्यो में टीम भावना जगाकर निष्ठापूर्वक कार्य करने की प्रेरणा जाग्रत कराना होगा। विद्या भारती का प्रतिबिम्ब आचार्य व प्रधानाचार्य दोनों होते हैं, अत: उन्हें आत्मीयता व समर्पण भाव से कार्य करते हुए सभी के लिए प्रेरणा स्रोत बनना चाहिए।

समापन सत्र में अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री जे. एम. काशीपति जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत माता हमारी ईष्ट हैं, इनके प्रति भक्ति के भाव को जीवन में एकाकार करना, जिसमें परिवार, समाज सभी इसके अनुकूल हों। शिक्षा भारतीय दर्शन के अनुसार होनी चाहिए। हमारा संवाद अपने परिवार व बस्ती के साथ कैसा है, यह चिंतन करना चाहिए। पूर्व छात्रों का अपने कार्यों में सहयोग लेना चाहिए। समाज के विद्वतजन जो ओपीनियन मेकर हैं, ऐसे अपने विचार वाले लोगों को अपने साथ जोड़ना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि हम सभी साधक के रूप में विद्या भारती के कार्य में लगे हुए हैं, हमारा चिन्तन, मनन इसके अनुकूल हो। अपने विषय में चिन्तन करें, स्वयं के स्तर में निरन्तर सुधार हो, संवाद के माध्यम से हमारी बस्ती में रहने वालों से सम्पर्क हो एवं उनको ध्येय के साथ जोड़ने के अच्छे परिणाम से ही समाज में परिवर्तन होगा। अंत में राष्ट्रगीत 'वन्देमातरम्' के गान के साथ बैठक सम्पन्न हुई।

गंगाविष्णु बिश्नोई,
प्रान्त निरीक्षक, जोधपुर।

माँ और मातृभाषा ही है सशक्त राष्ट्र निर्माण का आधार

- महामहिम राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल

''वर्तमान समय में समर्थ समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका प्रमुख है। माँ और मातृभाषा ही सशक्त राष्ट्र निर्माण का आधार होता है। उसे अपने घर और समाज दोनों को संस्कारित करने की जिम्मेदारी होती है। भारत में वैदिक काल से ही नारी का सम्मान होता रहा है। इनका आदर्श सीता और सावित्री रहीं हैं। समर्थ महिला ही सशक्त समाज का और सशक्त समाज ही समर्थ राष्ट्र का निर्माण करता है।'' इस आशय के विचार प्रदेश की महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल ने मुख्य वक्ता के रूप में जबलपुर में 'सशक्त महिला-समर्थ भारत' विषय के कार्यक्रम में व्यक्त करते हुए कहा।

इस अवसर पर उपस्थित महामण्डलेश्वर स्वामी श्यामदेवाचार्य महाराज जी ने बताया कि नारी श्रद्धा की प्रतिमुर्ति और परिवार की धुरी हैं। इस कारण से ही समाज और देश समर्थ बनता है। बाला साहेब भाऊराव देवरस सेवा न्यास, करंजा, जिला बालाघाट द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की प्रस्तावना सुश्री रेखा चुड़ासमा और न्यास की गतिविधियों की जानकारी डॉ. राजकुमार आचार्य द्वारा दी गई।

यह न्यास प्रतिवर्ष समाज में नि:स्वार्थ भाव से कार्य करने वाले व्यक्तियों का सम्मान कर उनके कार्यों की सराहना और प्रोत्साहन करता है। बालासाहेब भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में इस वर्ष का सेवा रत्न अलंकरण डॉ. पवन स्थापक को प्रदान किया गया जो दिव्यांगों के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था 'सक्षम' के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। उनके द्वारा किए जाने वाले सामाजिक और नि:स्वार्थ सेवाभाव के कारण महामहिम राज्यपाल ने उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर न्यास की स्मारिका का विमोचन महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल, जगद्गुरु स्वामी डॉ. स्यामदेवाचार्य जी महाराज, श्रीमती स्वाती गोडबोले, सुश्री रेखा चुड़ासमा एवं डॉ. राजकुमार आचार्य ने संयुक्त रूप से किया।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में महापौर डॉ. स्वाती गोडबोले विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रांतीय आचार्य कार्यशाला, बिहार

विद्या भारती से संबद्ध, भारती शिक्षा समिति, बिहार के निर्देशन में त्रिदिवसीय आचार्य कार्यशाला का आयोजन सरस्वती विद्या मंदिर, मुंगेर के प्रांगण में 31 मार्च से 02 अप्रैल 2019 तक किया गया।

कार्यशाला के उद्घाटन में विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष श्री निर्मलकुमार जालान ने कहा कि ''विद्या भारती के द्वारा संचालित विद्यालय के आचार्यों का उद्देश्य अपने छात्रों को ऐसा ज्ञान देना है जिससे वे शिक्षा ग्रहण करने के बाद समाज से जुड़ कर समाज में सम्मानपूर्वक जीवन जी सके। आज समाज में हर क्षण प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा है, जिसका छात्रों को सामना करना पड़ता है। इसके लिए उन्हें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक रूप से तैयार करने के लिए आचार्यों का भी मूल्य संवर्धन आवश्यक है।'' उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ धन कमाना ही नहीं अपितु ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' होना चाहिए। मातृभाषा के प्रति सम्मान हो ऐसी भावना समाज एवं छात्रों में जागृत करना चाहिए।

कार्यशाला में आचार्यों द्वारा अपने-अपने विषय में शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण एवं प्रदर्शन किया गया। शिक्षण अधिगम सामग्री पर चर्चा करते हुए विद्यालय प्रबंधकारिणी समिति की सह सचिव सरोज कुमारी ने कहा कि श्यामपट्ट शिक्षक का मित्र होता है तथा शिक्षण अधिगम सामग्री की सहायता से शिक्षक बहुत हीं प्रभावशाली, रोचक एवं सुगम तरीके से अपनी बातों को छात्रों को समझा सकते हैं।

कार्यशाला के अन्य सत्रों में उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के लिए आवश्यक प्रयास, ज्ञान-विज्ञान मेला, पंचपदी शिक्षण पद्धति, बालिका शिक्षा, अभिभावक संगोपन, वार्षिकोत्सव आदि विषयों पर चर्चा सम्पन्न हुई। नए सत्र के प्रारम्भ में सम्पन्न यह कार्यशाला आचार्यों के लिए आनन्द व उत्साह प्रदान करने वाली रही।

दो दिवसीय प्रचार विभाग की कार्यशाला का आयोजन

विद्या भारती पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र ने दिनांक 29 एवं 30 दिसंबर 2018 को दो दिवसीय प्रचार विभाग की कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला के उदघाटन सत्र को श्री रविकुमार जी, प्रान्त सह संगठन मंत्री, हरियाणा ने संबोधित किया। इस सत्र में उन्होंने Social Media के विषय को Power Point Presentation के माध्यम से रखा। यह कार्यशाला 7 सत्रों में सम्पन्न हुई। जिसमें वर्तमान समय में Social Media का महत्त्व तथा समाचार प्रेषण की सावधानियाँ आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। सात सत्रों की इस कार्यशाला को श्री मधुकर जी, (विभाग प्रचार प्रमुख रा. स्व.संघ.), श्री विपिन त्यागी जी व्यवसायी Social Media, श्री नरेंद्र मिश्रा जी (प्रान्त प्रचार टोली व विद्या वार्ता सम्पादक), श्री तपन कुमार (प्रान्त संगठन मंत्री, मेरठ) आदि ने संबोधित किया।

मुंगेर में आयोजित विभागीय कला संगम प्रतियोगिता सम्पन्न

'संगीत कला भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। बच्चों में प्रतिभाओं का विकास करने के लिए विद्या भारती ने संगीत को आधारभूत विषय के रूप में रखा है। हर बच्चे की प्रतिभा अपने आप में अतुलनीय एवं अविस्मरणीय है।' उक्त बातें भारती शिक्षा समिति, बिहार के प्रदेश सचिव श्री गोपेश कुमार घोष ने सरस्वती विद्या मंदिर, मुंगेर में आयोजित दिनांक 29 मार्च 2019 को विभागीय कला संगम प्रतियोगिता के उद्घाटन के अवसर पर कही।

कार्यक्रम में भारती शिक्षा समिति, बिहार के प्रदेश सह सचिव श्री प्रकाशचन्द्र जायसवाल ने कहा कि बच्चों के पंचकोषों का विकास करके ही छात्रों के मन को साधा जा सकता है और उसे देश का सुयोग्य नागरिक बनाया जा सकता है। विद्या भारती इसी दिशा में सतत् प्रयासरत है। इस अवसर पर उपस्थित कई सम्मानित संगीतज्ञ - पंडित गिरीन्द्र चन्द्र पाठक, पंडित सुरेन्द्र चन्द्र पाठक, पंडित बलीरामदास, पंडित विष्णु पाठक एवं श्री सुनील मिश्रा आदि ने गायन, वादन, नृत्य एवं अभिनय के रंगारंग संगीत प्रतियोगिता में प्रमुख निर्णायकों के रुप में अपना योगदान दिया।

संगीतज्ञ एवं कार्यक्रम के निर्णायक पंडित गिरीन्द्र चन्द्र पाठक ने कहा कि संगीत आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दोनों परिवेशों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, इसलिए बच्चों को संगीत अवश्य सिखाना चाहिए।

वनवासी छात्रावास अमरकंटक में पधारी महामहिम राज्यपाल

माँ नर्मदा के नदी के उद्गम पर अमरकंटक के सरस्वती शिशु मंदिर योगग्राम में महामहिम राज्यपाल श्रीमती आनंदी बेन पटेल का आगमन हुआ। महामहिम राज्यपाल ने सरस्वती शिक्षा परिषद् मध्य प्रदेश द्वारा नर्मदा नदी के उद्गम स्थल अमरकंटक में संचालित वनवासी छात्रावास की 'सुरभी गौशाला' का लोकार्पण 22 फरवरी 2019 को किया। इस बीच राज्यपाल ने रुद्राक्ष के पौधे का रोपण कर वनवासी छात्रावास के बच्चों के साथ वार्तालाप भी किया। बच्चों से शैक्षणिक, शैक्षणेत्तर गतिविधियों की जानकारी, उनकी पारिवारिक स्थिति, शिक्षा संबंधी भविष्य की योजनाओं की जानकारी प्राप्त की। राज्यपाल महोदया ने बच्चों को मन लगाकर पढ़ने एवं भविष्य की अभी से योजना बनाकर परिश्रम करने की सलाह दी।

बच्चों को शिक्षा का महत्त्व बताते हुए शिक्षकों या अभिभावकों के भय से पढ़ने का कार्य न कर स्वप्रेरणा से पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अपने पूरे मनोयोग से अध्ययन करने पर ही हम विषयों की गूढ़ता को सही ढ़ंग से समझ पाते हैं। राज्यपाल ने बच्चों को समझाते हुए कहा कि शिक्षा के दायरे को सिर्फ परीक्षा के ज्ञान तक सीमित न रखकर खाली समय में या अवकाश के दिनों में अन्य ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें, स्वतंत्रता सेनानियों के जीवनी एवं उनके प्रयास को भी पढ़ें। वहीं उन्होंने छात्र-छात्राओं को अपने स्वागत में मिले फलों को सभी बच्चों में वितरण किया।

श्रीकृष्ण चन्द्र गाँधी पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन

श्री कृष्ण चंद्र गाँधी पुरस्कार वर्ष 2007 से निरतंर पूर्वोत्तर जनजाति शिक्षा समिति, असम द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में अनुपम सेवा करने वाले एवं शिक्षादान को मूर्त रूप प्रदान करने व करवाने वाले कार्यकर्ता अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है। स्वर्गीय कृष्णचंद्र गाँधी जी के नाम से अलंकृत यह पुरस्कार कार्यकर्ताओं के लिए सर्वोच्च सम्मान है एवं अन्य कार्यकर्ताओं को प्रेरणा के साथ-साथ उर्जा प्रदान करने वाला है। वर्ष 2007 से 2016 तक 10 श्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ताओं को यह पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है।

दिनांक 2 मार्च 2019 को इस पुरस्कार के वित्तरण का समारोह गुवाहाटी में सम्मपन हुई, जिसमें वर्ष 2017 के लिए डिमा हसाओ जिले के माईबांग निवासी श्रीमती फली बोडो को गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. निर्मल कुमार चौधरी ने पुरस्कार प्रदान किया। श्रीमती फली बोड़ो एक समाजसेविका हैं जो कल्याण आश्रम माईबांग के बालिका छात्रावास की सचिव हैं। जनवरी 2019 में लोक निर्माण विभाग के प्रधान सहायक के पद से सेवा निवृत हुई हैं।

इसके साथ ही वर्ष 2018 के लिए गुवाहाटी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. उपेन राभा हकाचम को असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री कनकसेन डेका ने पुरस्कार प्रदान किया। श्री उपेन राभा लेखक व शिक्षाविद् हैं। उनका जनजाति भाषाओं के उत्थान के लिए विशेष योगदान रहा है।

समारोह में विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के संरक्षक व गुवाहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. निर्मलकुमार चौधरी ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरूआत की।

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के संरक्षक डॉ. निर्मल कुमार चौधरी ने लखीमपुर जिले के विशिष्ट व्यवसायी श्री राजेश मालपानी, श्री उत्तम साहू व श्री मोहित साहू को संरक्षक सदस्य के लिए सम्मान-पत्र प्रदान किया। विशिष्ट उद्योगपति श्री शंकरलाल गोयंका जी ने समारोह में आशीर्वचन प्रदान करते हुए समिति के कार्यो की सराहना की। समारोह का समापन वंदेमातरम् गायन के साथ हुआ।

विकाश शर्मा, क्षेत्रीय कार्यालय मंत्री, असम।

गीता विद्यालय, कुरुक्षेत्र में तीसरी पुरातन छात्र सम्मेलन सम्पन्न

श्रीमद्भगवत गीता विद्यालय में रविवार 24 फरवरी 2019 को तीसरी बार पुरातन छात्र अपनी यादें और अनुभव साझा करने के लिए शामिल हुए। आजादी से पहले 73 वर्ष पूर्व इस स्कूल की नींव राष्ट्रीय स्व. संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रद्धेय माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर जी ने रखी थी। शहर के इस स्कूल ने जहाँ अपनी खुद की प्रतिष्ठा कड़े अनुशासन के दम पर हासिल की, वहीं इस विद्यालय से सैकड़ों छात्र आज देश-विदेश में उच्च पदों पर काम करते हुए जिले व प्रांत का भी गौरव बढ़ा रहे हैं। छात्रों ने एल्युमिनाई मीट से पहले भास्कर के साथ अपनी यादें साझा की। गीता स्कूल शहर का एक ऐसा स्कूल है, जिसके छह से ज्यादा छात्र आई.ए.एस. हैं। दस से ज्यादा आई.पी.एस. व 12 से ज्यादा आई.आर.एस. में हैं। जबकि एच.सी.एस. व दूसरे प्रदेशों की प्रशासनिक सेवाओं में भी सैकड़ों पूर्व छात्र आज कार्यरत हैं। स्कूल के पूर्व छात्रों ने ही पुरातन-छात्र संघ की नींव रखी। शाम मित्तल बताते हैं कि वे इसके संस्थापकों में शामिल हैं। इसके बाद का जिम्मा पंकज शर्मा ने संभाला। कल उनके समेत सन् 1946 के बाद के बैचों के कई पुरातन छात्र यहाँ एकत्र हुए।

अनुशासन ने बनाया काबिल:- गिल्होत्रा शहर के ज्योतिनगर निवासी ओपी गिल्होत्रा राज्यशासन के पुलिस महानिदेशक बनने का गौरव मिल चुका है। सन् 75 में गिल्होत्रा ने यहाँ से 10वीं कक्षा पास की। वे कहते हैं कि यह स्कूल न होता तो शायद यहाँ तक न पहुँचते।

दैनंदिनी स्कोर ने सिखाई नैतिकता:- सैनी प्रतापगढ़ के रोशनलाल सैनी इस स्कूल के पहले आई.ए.एस. हैं। प्रदेश के होम सेक्रेटरी रह चुके रोशनलाल सैनी बताते हैं कि सन् 1967 से 72 तक वे यहाँ पढ़े। एडमिशन के साथ सभी बच्चों को 150 स्कोर के साथ दैनंदिनी मिलती थी। देशभक्ति, नैतिकता, ईमानदारी और अनुशासन यहाँ से सीखा।

ऐसा कड़ा अनुशासन किसी भी स्कूल में न था:- सन् 86 बैच के आर.पी. सैनी डी.ए.वी. कॉलेज करनाल में प्रिंसिपल हैं। बताते हैं कि उनके कजन रोशनलाल जी ने यहाँ एडमिशन कराया था। ऐसा कड़ा अनुशासन किसी भी स्कूल में न था, और न होगा।

सभी शिक्षक समर्पित थे:- सन् 80 बैच के स्पोर्ट्स ऑर्थोपिडिक सर्जन डॉ. रमन अग्रवाल फोर्टिस में कार्यरत हैं। डॉ. रमन कहते हैं कि यहाँ के जैसे समर्पित शिक्षक उन्होंने कहीं नहीं देखे। जबकि बृजलाल जी जैसे समर्पित टीचर अपने शिष्य के घर पहुँच कर नि:शुल्क एग्जाम की तैयारी करवाते थे। आज मैं इसी स्कूल की बदौलत यहाँ तक पहुँचा हूँ।

स्कूल का अनुशासन आज भी याद है:- सीनियर आई.पी.एस. शक्ति पाठक भी 80 के दशक में इसी स्कूल के सर्वश्रेष्ठ छात्रों में रहे हैं। आज शक्ति पाठक जम्मू कश्मीर में डी.आई.जी. हैं। उनके पिता उत्तमचंद शास्त्री को जहाँ आज हर पुरातन छात्र याद करते हैं।

फटकार के साथ प्यार भी:- पंचायती राज विभाग, हरियाणा में चीफ इंजीनियर व 81 बैच के छात्र शंकर जिंदल कहते हैं कि इस स्कूल का सख्त अनुशासन सदा याद रहेगा। इसी स्कूल ने ही हमें जिंदगी में न केवल कामयाब बनाया बल्कि उन्होंने इस स्कूल से पढ़कर निकले किसी ऐसे छात्र या अधिकारी या किसी व्यक्ति के बारे में नहीं सुना, जिसके ऊपर कभी कोई गलत आरोप लगा हो। यह स्कूल सच में देशभक्त व्यक्ति तैयार करता है।

यहीं सीखी सच्चाई और नैतिकता:- यमुनानगर अग्रवाल अस्पताल के संचालक डॉ. अनिल अग्रवाल बताते हैं कि सन् 74 में उन्होंने यहां से 10वीं पास की। वे बताते हैं कि यहीं नैतिकता व सच्चाई का जीवन में महत्त्व जाना। इसी विद्यालय ने सपूर्ण छात्र व जिंदगी में व्यवहारिक तौर पर सशक्त बनाया।

बत्रा जी ने बनाई जिंदगी:- रेलवे मे चीफ इंजीनियर रहे श्यामलाल बतरा बताते हैं कि सन् 70 में मैंने और धुराल के आठ अन्य बच्चों ने छठी में यहाँ एडमिशन लिया। इसी स्कूल की बदौलत ही वे और उनके सभी भाई प्रशासनिक सेवाओं में हैं।

आज भी याद आते हैं वो टीचर- सन् 89 में दसवीं करने वाले आई.ए.एस. विरेंद्र अरोड़ा कहते हैं कि आज भी स्कूल के सभी टीचर याद आते हैं। बज सर के पढ़ाने का तरीका बतरा जी का अनुशासन और उत्तम सर की दी हुई सीखें सब कुछ जहन में ताजा हैं।

मैं तो यहाँ मैनेजर भी बना:- स्कूल से न केवल अधिकारी निकले बल्कि शहर और प्रदेश की राजनीति को भी कई चेहरे यहाँ से मिले। डॉ. पवन सैनी और सुभाष सुधा भी यहीं से पढ़े हुए पुरातन छात्र हैं। डॉ. सैनी बताते हैं कि वे सौभाग्यशाली हैं कि यहाँ से पढ़ने के बाद विद्या भारती में मैनेजर और गीता कन्या स्कूल प्रबंधन समिति में अध्यक्ष के तौर पर काम किया। डॉक्टर बन चुकी उनकी बेटी भी यहीं पढ़ी है। प्रिंसिपल बतरा जी उनसे देश-भक्ति के गीत गववाते थे।

विद्या भारती के मार्गदर्शन में समुत्कर्ष एक नए शिखर पर

विद्या भारती ही एक ऐसी संस्था है जो आज भी शिक्षा के बढ़ते बाजारवाद को रोककर संस्कारित एवं कौशल विकास के संकल्प का केंद्र है - डॉ. बलतेज सिंह मान

विश्व भर में बढ़ते बाजारवाद और ग्लोबल हो चुकी शिक्षा के बीच भारतीय छात्रों के लिए उच्च शिक्षा का आधुनिक ढाँचा चुनौती भरा है। शैक्षिक विकास के लिए जरूरी है शिक्षा का बाजारीकरण रोककर शिक्षा के ढाँचागत स्वरूप को बदलकर इसे आसान बनाया जाए, ताकि यह सर्वसुलभ हो सके। आज मैं पूरे गर्व से यह कह सकता हूँ कि पूरे विश्व में विद्या भारती ही एक ऐसी संस्था है जो आज भी शिक्षा के बढ़ते बाजारवाद को रोककर संस्कारित एवं कौशल विकास की

शिक्षा प्रदान करती है। आज समय वन टच और वन क्लिक में सिमट गया है, ऐसे में महज किताबी ज्ञान किसी छात्र के विकास के लिए काफी नहीं है। सबसे ज्यादा जरूरत उनकी क्षमता को पहचानकर निखारने की है ताकि कैरियर से जुड़ी चुनौतियों को दूर कर वे कामयाब हो सकें और अपनी मंजिल पा सकें। इस क्षेत्र में समुत्कर्ष एवं आई.टी. सेल का कार्य प्रशंसनीय है। किसी बच्चे की शिक्षा मातृभाषा में होना यह उसके सौभाग्य की बात है, क्योंकि अपनी भाषा में सीखना और समझना सरल है।

विद्या भारती महाकौशल प्रांत के द्वारा संचालित 'समुत्कर्ष' द्वारा सिर्फ 1 वर्ष में 45 छात्रों का प्रशासनिक सेवाओं में अपना स्थान सुनिश्चित कराना निश्चित ही प्रशंसनीय है।'' उक्त विचार समुत्कर्ष में आयोजित कैरियर गाइडेंस के लिए छात्रों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग, भारत सरकार के सदस्य डॉ. बलतेज सिंह मान ने व्यक्त किए। यह कार्यक्रम 23 जनवरी 2019 को सम्पन्न हुई।

महाकोशल प्रांत की 'समुत्कर्ष' आज बढ़ते बाजार के बीच महज प्रचार या व्यवसाय करने वाली संस्था नहीं है बल्कि ये शिक्षा और रोजगार के लिए जारी प्रतिस्पर्धा के बीच का पूल है। छात्रों को सीखने का मंच प्रदान करना, उन्हें विस्तृत अध्ययन साम्रगी उपलब्ध कराना, सतत् मूल्यांकन की प्रक्रिया को बनाए रखना, अनुभवी प्रशिक्षकों से सहायता, बौद्धिक खेलों जैसे किंज आदि के जरिये विकास कराना समुत्कर्ष की प्राथमिकता है। स्किल डेवलपमेंट कैरियर के विकास के लिए बेहद जरूरी है। इस अवसर पर डॉ. ए.डी.एन. बाजपेयी पूर्व कुलपति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

योगग्राम अमरकंटक में सम्पन्न बालक शौर्य शिविर

विद्या भारती महाकौशल के अमरकंटक में तीन दिवसीय बालक शौर्य शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर दिनांक 17 से 19 फरवरी 2019 तक आयोजित हुआ। इस शिविर के समापन अवसर पर डॉ. पवन तिवारी (संगठन मंत्री, महाकौशल) ने अपने ग्रामीण परिवेष पर विशेष चर्चा करते हुए कहा कि गाँव में आज भी मिलजुल कर रहने की कला और सहयोगी जीवन जीने का जीता जागता उदाहरण अनुभव करने को मिलता है। गाँव का जीवन अद्भुत है। गाँव में सब एक परिवार के जैसे मिलजुल कर रहते हैं। भारतीय परम्परा और संस्कृति आज भी गाँवों में जीवन्त है। हमारे विद्यार्थी भविष्य के भारत की राष्ट्रशक्ति हैं। देश तेजी से प्रगति कर रहा है। इस बदलाव में भी हमारे विद्यार्थी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, शिष्टाचार एवं धार्मिक परम्परा जीवंत रख गाँवों के विकास एवं उन्नति में योगदान दे सकें, इसी संकल्प के साथ विद्या भारती महाकौशल प्रांत द्वारा योग ग्राम अमरकंटक में त्रिदिवसीय शौर्य-शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय योग प्रमुख श्री के. स्थानुमूर्ति, श्री रविशंकर शुक्ल, श्री अंबिका प्रसाद तिवारी आदि गणमान्य जन उपस्थित रहे। चलते चलते श्री पवन जी ने एक ध्येय वाक्य दिया -

दिल्ली छोड़ो, मुंबई छोड़ो, चलो गाँव की ओर !
महानगरों, नगरों को छोड़ो, चलो प्रकृति की ओर !!

शिक्षा बोझयुक्त नहीं बल्कि बोझमुक्त होना चाहिए - श्रीराम जी अरावकर

सरस्वती विहार शैक्षिक संस्थान, मंदसौर द्वारा संचालित नवनिर्मित प्रकल्प ''शिशु वाटिका'' के नवीन भवन का लोकार्पण दिनांक 07 अप्रैल 2019 को विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीराम अरावकर (मुख्य अतिथि), विशेष अतिथि मालवा प्रांत के संगठन मंत्री श्री अखिलेश मिश्र, व प्रांत प्रमुख श्री ओमप्रकाश जांगलवा, एवं विशिष्ट अतिथि (सेवानिवृत्त न्यायाधीश उच्च न्यायालय, म.प्र.) श्री गिरीराज सक्सेना के शुभ आतिथ्य में हुआ।

मुख्य अतिथि श्रीराम अरावकर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि पहले की शिक्षा और आज की शिक्षा में बहुत अंतर है। पुरानी शिक्षा पद्धति बोझमुक्त होती थी, जिसमें बालक हँसते-खेलते शिक्षा ग्रहण कर लेता था। किन्तु आज बालकों की शिक्षा बोझयुक्त हो गई है। शिक्षा कम और बस्ते का बोझ उसकी क्षमता से अधिक हो गया। शिशु राष्ट्र की अनुपम धरोहर है। शिशु के बस्तों के बोझ के बजाय शिक्षा व संस्कृति का विकास होना चाहिए।

इस लोकार्पण कार्यक्रम में प्रात:काल वास्तु पूजन एवं शांति यज्ञ में वैदिक मंत्रोच्चार द्वारा कोषाध्यक्ष श्री रवि शर्मा ने छात्रों के अभिभावकों के साथ कलश पूजन कर यज्ञ में आहूतियाँ दी। श्री परवाल ने नवीन शिशु वाटिका के नवीन भवन के निर्माण की योजना, संकल्पना एवं आय-व्यय की स्थिति समारोह में प्रस्तुत की।

भेरूलाल कनेरिया।

युवा देश सेवा के लिए सेना में जाएँ - कर्नल दीपक रामपाल

पूर्व छात्र परिषद् ने 26 सेना के जवानों को किया सम्मानित

विद्या भारती के विद्या निकेतन के पूर्व छात्र परिषद्, जिला उदयपुर ने वीर रंगोत्सव कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 23 मार्च 2019 को सेक्टर-4 स्थित महाराणा प्रताप सभागार, उदयपुर में किया। पूर्व छात्र परिषद् के सह संयोजक राज राजेश्वर जैन एवं पूर्व छात्र परिषद् (VNPCP) के जिला संयोजक डॉ. जिनेन्द्र शास्त्री ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एकलिंग छावनी एडम. कमाण्डेंट दीपक रामपाल ने सम्बोधित करते हुए कहा कि सेना के जवान आम जनता के परिवारों से ही आते हैं, जिन्हें सेना तराश कर योग्य सैनिक बनाती है। उन्होंने सेना की ओर से यह आश्वासन दिया कि कभी भी भारतीय तिरंगे को झुकने नहीं देंगे। दुश्मन चाहे चीन हो, चाहे पाकिस्तान, वे जिस भाषा में समझते हैं, उसी भाषा में उसे समझाएंगे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवा निवृत कर्नल के.एस. शक्तावत ने विद्या भारती के कार्यक्रम में आकर जो अनुशासन पूर्वछात्रों का देखा, उसे अपने सेना के कार्यकाल को याद करते हुए कहा कि सेना के अनुशासन की तरह ही ये पूर्वछात्र अनुशासित हैं। उन्होंने पूर्वछात्र परिषद् के इस कार्यक्रम की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

पूर्वछात्र परिषद् चित्तौड़ प्रांत के संयोजक डॉ. विक्रम मेनारिया ने कहा कि निश्चित रूप से सेना और विद्या भारती का संयोग राष्ट्र और समाज के लिए आवश्यक है, क्योंकि ये दोनों ही संगठन नि:स्वार्थ भाव से देश-सेवा का काम कर रहे हैं।

कार्यक्रम में कर्नल दीपक रामपाल, कर्नल संजय त्यागी, रिटायर्ड कर्नल के.एस. शक्तावत, विद्या भारती के प्रांत संगठन मंत्री गोविन्द कुमार, सहमंत्री भंवर लाल शर्मा उपस्थित रहे।

सेना के 26 जवानों का किया गया सम्मान:-

कार्यक्रम में भगत सिंह, सुखदेव व राजगुरू के शहादत दिवस के अवसर पर सेना के जवानों को भगत सिंह की स्मृति चिह्न, उपहरणा, गुलदस्ता, हल्दीघाटी की मिट्टी का तिलक से 26 सेना के जवानों का सम्मान किया गया, जिसमें 12वीं बटालियन राजपुताना रेजीमेंट एवं 16वीं सिख रेजीमेंट के नायब सुबेदार, नायक, रायफल मैन, लांस नायक व सिपाही शामिल थे।

विद्या भारती के विद्या निकेतन पूर्वछात्र परिषद् ने अपने कार्यक्रम में सेना के जवानों को पाकर गर्व महसूस किया और ''हाउ इज द जोश? हाई सर! व भारतीय सेना जिन्दाबाद'' के गगनभेदी नारों से वातावरण को गुजायमान कर दिया।

संकुल संवाद में समाचार भेजने का आप सभी से आग्रह

विद्या भारती योजनान्तर्गत संचालित विद्यालयों के आचार्य अपने विद्यालयों में शिक्षण क्षेत्र में नित्य नूतन प्रयोग करते रहते हैं। इन नवाचारी प्रयोगों के माध्यम से एक ओर जहाँ छात्र-छात्राओं में अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ती है वहीं दूसरी ओर वे प्रयोगधर्मी व सृजनशील भी बनते हैं।

इसी प्रकार भैया-बहनों में देशबोध, समाजबोध, संस्कृतिबोध व अध्यात्मबोध का विकास हो कर वे राष्ट्र के योग्य नागरिक के रूप में विकसित हों इस हेतु अनेकानेक प्रयोग भी विद्यालयों में किए जाते हैं। इन प्रयोगों का उद्देश्य रहता है कि हमारे विद्यार्थियों में 'सब समाज साथ ले ध्येय शिखर हम चढ़ें' का भाव विकसित हो।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विभिन्न स्थानों पर किए जा रहे ये प्रयोग सभी विद्यालयों की साझा विरासत बनें।

अत: आप से आग्रह है कि अपने एवं आस-पास के विद्यालयों में किए जा रहे इन नवाचारी प्रयोगों के समाचार संकुल संवाद (मासिक पत्रिका) को अवश्य भेजें। समाचार भेजते समय इस बात का ध्यान रहे कि शब्द सीमा अधिकतम ३०० शब्दों की हो, छायाचित्र स्पष्ट हों।

केवल कार्यक्रमों की जानकारी के स्थान पर उन कार्यक्रमों, बैठकों, वर्गों में किए गए नवीन प्रयोगों की जानकारी हमें भेजें जिससे संकुल संवाद का स्वरूप और भी निखरेगा तथा उसकी रोचकता भी बढ़ेगी।

(डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी)

प्रकाशक, विद्याभारती संकुल संवाद

विद्याभारती संकुल संवाद
Date of publishing : 20 April, 2019
Total No. of Pages : 8

RNI No. : DELBIL/2005/15122
D.L. No. : DL (S)-01/3362/2019-21
Date of Posting -24-25 April, 2019

प्रांतीय प्रधानाचार्य सम्मेलन, उत्तर बंग, सिलिगुड़ी में सम्पन्न

विद्या भारती उत्तर बंग के सिलिगुड़ी प्रांत का प्रधानाचार्य सम्मेलन दिनांक 23 से 25 मार्च 2019 को शारदा शिशु तीर्थ मंदिर, दिनहाटा के सभागार में श्री क्षितिजचन्द्र सरकार विद्या भारती उत्तर बंग के मार्गदर्शक के कर कमलों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ शुभारंभ हुआ। सम्मेलन में श्री क्षितिजचन्द्र सरकार ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि शिशु के सर्वांगीण विकास में मातृभाषा के साथ-साथ अंग्रेजी के पठन-पाठन पर भी जोर दिया।

सम्मेलन में प्रांतीय परीक्षा प्रमुख श्री निर्भय कांति घोष ने सुझाव देते हुए कहा कि उत्तर पुस्तिकाओं के कागज का स्तर अच्छा होना चाहिए। साथ ही परीक्षा का परिणाम एक निश्चित समय सीमा तक प्रांतीय कार्यालय में पहुँचाना आवश्यक है। श्री अजीत पाल ने उत्तर बंगाल से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'अर्पण' के विषय वस्तु पर प्रकाश डालते हुए विद्या भारती के सभी पत्रिका को पढ़ने का आग्रह सभी प्रधानाचार्यों से किया। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तर बंगाल के सभी विद्यालयों में चतुर्थ कक्षा से सप्तम कक्षा तक 'संस्कृति ज्ञान परीक्षा' हो रही है जिसमें अधिकतम संख्या में अभिभावक-अभिभाविका भी भाग ले रहीं हैं, यह एक सराहनीय कदम है।

प्रांतीय प्रशिक्षण प्रमुख श्री विमलकृष्ण दास ने प्रशिक्षण की उपयोगिता बताते हुए कुशल प्रशिक्षक की आवश्यकता पर बल दिया। उत्तर बंगाल के संगठन मंत्री श्री पार्थ घोष ने सेवा, जनसंपर्क व प्रचार पर जोर देते हुए संस्कार केन्द्र की स्थापना एवं विद्यालय के ई.-मेल आई. डी. बनाने पर भी बल दिया। अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री गोविन्द चन्द्र महंत जी ने ग्वालियर में आयोजित संघ की बैठक में निर्णय के बारे में बताया। शिशुवाटिका के तीन स्तर, बारह आयाम एवं विद्या भारती के चार आयामों का भी उल्लेख किए तथा विद्या भारती के Portal के बारे में भी चर्चा की।

सम्मेलन में प्रांत के 16 संकुलों से 78 प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। श्री गोविन्द चन्द्र महंत के समापन भाषण के पश्चात प्रधानाचार्य सम्मेलन राष्ट्र-गीत 'वंदे मातरम्' के साथ सम्पन्न हुआ।

विद्या भारती परिवार की ओर से आप सभी को नववर्ष प्रतिपदा विक्रमी सवंत् 2076 की हार्दिक शुभकामनायें।

सेवा में

प्रकाशक एवं मुद्रक : श्री ललित बिहारी गोस्वामी, महामंत्री, विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग, नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065, के लिए हिन्दुस्तान ऑफसेट प्रेस, ए-26, नारायणा इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित एवं विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, प्रज्ञा सदन, गो.ला.त्रे. सरस्वती बाल मंदिर परिसर, म.गाँ. मार्ग नेहरू नगर, नई दिल्ली-110065 से प्रकाशित। **संपादक :** श्री ललित बिहारी गोस्वामी, फोन : 011-29840013